International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 02(II), April - June, 2022, pp. 61-63

व्यावसायिक व पारम्परिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की आक्रामकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

विपिन कुमार वशिष्ठ*
डॉ. निर्मला राठौर**

प्रस्तावना

किसी भी समाज या राष्ट्र का विकास उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर है। शिक्षा की सकंल्पना में व्यक्ति को बेहतर मानव बनाने का सकंल्प निहित है। बेहतर मानव ही विश्व में मानवता के कल्याण व विकास में अपना योग दान देने में तत्पर हो सकता है। शिक्षा बेहतर भविष्य के लिए गत्यात्मक परिवर्तन का स्रोत है। किसी भी युग में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षा नीति पर राष्ट्र की परम्परा, राष्ट्रीय प्रतिभा तथा राष्ट्र की परिस्थिति के सम्बन्ध में विचार होता आया है। इसका कारण यह है कि राष्ट्र के सर्वोत्तम विकास का प्रभावशाली माध्यम शिक्षा है।

विद्यालयों का मुख्य कार्य बालकों को शिक्षा प्रदान करना होता है और उसको पूर्ण करने के लिए वहाँ पर जो कुछ किया जाता है उसे पाठ्यक्रम का नाम दिया गया है। पाठ्यक्रम को परिभाषित करते हुए एक विद्वान ने इसे व्हॉट ऑफ एजूकेशन कहा है। प्रथम दृष्टि से यह परिभाषा बहुत सरल प्रतीत होती है परन्तु इस व्हॉट की व्याख्या करना तथा कोई निश्चित उत्तर प्राप्त करना बहुत कठिन कार्य है। इस सम्बन्ध में अमेरिका के नेशनल एजूकेशन एसोसिएशन ने टिप्पणी करते हुए कहा– "विद्यालयों का कार्य क्या है ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर कई बार अनेक ढंग से दिया जा चुका है, फिर भी बार बार इस प्रश्न को उठाया जाता रहा है। कारण स्पष्ट है। यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर प्रत्येक समाज एवं प्रत्येक पीढ़ी की बदलती हुई प्रकृति एवं आवश्यकताओं के अनुसार बदलता रहता है।

इसी प्रकार शिक्षा के इतिहास से भी इस बात की पुष्टि होती है कि समय के साथ साथ पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन होते रहे हैं तथा इसमें कभी व्यापकता और कभी संकीर्णता आती रही है। परन्तु शिक्षाविदों को जब इस बात का आभास हुआ कि विद्यालयों में शिक्षित युवक सदैव अपने भावी जीवन में सफल नहीं हो पाते हैं तब यह निष्कर्ष निकाला गया कि जीवन की तैयारी के लिए पढ़ना लिखना ही सब कुछ नहीं है। मनोविज्ञान के विकास ने भी इस धारणा को बल प्रदान किया कि मात्र अध्ययन अध्यापन पर ही पूरा दबाव रखना बालकों के विकास की दृष्टि से न केवल एकांगी है, बल्कि अन्य प्रवृत्तियों के समुचित विकास के अभाव में हानिप्रद भी हो सकता है। इस दृष्टिकोण का प्रभाव विद्यालयों के कार्यक्रमों पर पड़ा और उनमें व्यापकता आनी प्रारम्भ हुई। विद्यालयों में पाठ्यविषयों के साथ साथ ऐसी प्रवृत्तियों का समावेश भी किया जाने लगा, जिनसे बालकों में बौद्धिक ज्ञान के साथ साथ स्वास्थ्य, सौन्दर्यबोध, सृजनात्मकता तथा अन्य मानवीय एवं सामाजिक गुणों का समुचित विकास भी हो सके।

पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम की अवधारणा के सम्बन्ध में शिक्षा विद्वानों ने भिन्न भिन्न विचार व्यक्त किये हैं। वास्तव में पाठ्यक्रम विषय में कोई दो शिक्षाविद एक मत नहीं दिखाई देते हैं। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में सामान्य रूप से दो प्रकार के पाठ्यक्रम देखने को मिलते हैं– पारम्परिक पाठ्यक्रम एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम।

* शोधछात्र, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।
** प्रोफेसर, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर, राजस्थान।

शिक्षा बालक के ज्ञान चक्षुओं को खोलती है और उसे आजिविका के लिए तैयार करती है। आज का युवा कक्षा 10 या 12 के बाद यातो पारम्परिक पाठ्यक्रम का चुनाव करता है या फिर व्यावसायिक पाठ्यक्रम का चुनाव करता है। व्यावसायिक व पारम्परिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में पाठ्यक्रम के आधार पर उनकी सोचने समझने में उनकी आदतों में भिन्नता होना स्वाभविक है ऐसा सामान्य रूप से समझा जाता है।

पारम्परिक पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम अध्ययन अध्यापन हेतु विद्यालय–महाविद्यालय के कार्यक्रम का विवरण होता है। इसमें उन्ही विषयों एवं अनुभवों को सम्मिलित किया जाता है, जिनका शिक्षण विद्यार्थियों के लिए अभिष्ट होता है। प्राचीन सन्दर्भ में इसका अभिप्राय तत्कालीन समय में पढ़ाये जाने वाले धार्मिक एवं लौकिक विषयों से है। पाठ्यक्रम की सामग्री सम्पूर्ण मानव जाति के वैयक्तिक एवं सामुहिक अनुभवों से ग्रहण की जाती है।

पारम्परिक पाठ्यक्रम का तात्पर्य उस पारम्परिक पाठ्यक्रम से है जसमें कुछ विषय तो ऐसे होते हैं जो सभी बालकों के लिए अनिवार्य होते हैं तथा कई विषय ऐसे होते हैं जिनमें से कुछ को विद्यार्थी अपनी रूचियों एवं क्षमताओं के अनुसार चुन लेते हैं।

व्यावसायिक पाठ्यकम

व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से युवक भावी जीवन के लिए तैयार होता है। वह अपने तथा अपने परिवार के जीवन यापन के लिए आवश्यक व्यावसायिक योग्यताओं एवं कौशलों को विकसित करने तथा उन्हे प्रयुक्त करने की दृष्टि से सक्षम हो पाता है। आने वाले जीवन में वह संघर्षों में पिस न जाये इसके लिए वह व्यावसायिक पाठ्यक्रम के माध्यम से ही शक्ति अर्जित करता है। व्यावसायिक पाठ्यक्रम के माध्यम से अर्जित ज्ञान जीवन का अंग बन जाता है।

युनेस्को युनेस्को ने व्यावसायिक पाठयक्रम की परिभाषा इस प्रकार दी है– ''व्यावसायिक पाठ्यक्रम शिक्षा का एक व्यापक प्रत्यय है, इसके अन्तर्गत शैक्षिक प्रक्रिया के सभी पक्ष तथा सामान्य शिक्षा तकनीकी शिक्षा विज्ञान से सम्बन्धित प्रयोगशाला कौशल, अभिवृत्तियों के ज्ञान तथा बोध से सम्बन्धित अतिरिक्त पक्षों को शामिल किया जाता है। जिसका सम्बन्ध आर्थिक सामाजिक जीवन तथा रोजगार की तैयारी से भी होता है। इस प्रकार की शिक्षा सामान्य शिक्षा का समन्वित खण्ड, सतत ् शिक्षा तथा रोजगार के क्षेत्र की तैयारी का होता है।''

समस्या का औचित्य

वर्तमान समय जागरुकता का समय है, जब माता–पिता अपने बच्चों को विद्यालय भेजते हैं तो यह निश्चित कर लेते है कि बच्चे को भविष्य में क्या बनना है ? किसी भी बच्चे का भविष्य, कि उसे किस दिशा में भेजना है या ले जाना है? यह उसके परिवार के सदस्यों द्वारा ही तय किया जाता है। बच्चे का बौद्धिक स्तर क्या है? उसकी रूचि क्या है? उसका रुझान किस तरफ है? तथा उसकी आन्तरिक प्रतिभा उसे किस तरफ ले जाना चाहती है? यह सब पता नहीं लगाया जाता है। बच्चे की भविष्य की दिशा बच्चे की इच्छा के अनुसार तय नहीं की जाती है। बच्चा भी माता–पिता के प्रति भावात्मक लगाव होने के कारण उनकी इच्छा के विरुद्ध अपनी बौद्धिक क्षमता को नहीं थोपना चाहता। यही कारण है कि पढ़–लिख जाने के पश्चात जब उसको जीविका नहीं मिल जाती, तब उसकी प्रतिभा व क्षमता व्यर्थ चली जाती है। वर्तमान समय की भागदौड़ व प्रतिस्पर्धा के युग में यही बालक युवा होकर निराशा के अन्धकार में निरन्तर गिरता हुआ असफलता का सामना करता रहता है। इस कारण अनेकानेक जटिलताएँ एवं असामान्य परिसथितियाँ उत्पन्न हो रही है जैसे तनाव, आक्रामकता, मानसिक एवं सांवेगिक असंतुलन, समायोजन का अभाव आदि। किशोरावस्था का समय बालक प्रायः विद्यालय में ही व्यतीत करता है यहीं उसकी आकांक्षाये पल्लवित होती है अर्थात भविष्य निर्माण की योजना का विकास विद्यालय–महाविद्यालय में ही होता है वह किस व्यवसाय को करने की आकांक्षा रखता है या वह किस क्षेत्र में स्वयं को स्थापित करना चाहता है यह उसके विषय चयन से भी स्पष्ट हो जाता है। किशोर अपनी आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए किसी भी प्रकार का जोखिम उठाने के लिए तत्पर रहते है उनका एकमात्र उद्देश्य अपने लक्ष्य को पाना होता है।

किशोरों की आकांक्षायें पूर्ण न होने पर उनमें तनाव एवं आक्रामकता जैसी प्रवृत्तियॉ पनपने लगती है वे बात बात पर अपनी आक्रामकता दिखाते है। किशोर भावनाओं को अधिक महत्व देते है इसलिए वे निर्णय लेते समय सही और गलत का ध्यान नही रखते है और अपनी आक्रामकता अपशब्दों, हिंसा और विभिन्न क्रियाओं के द्वारा व्यक्त करते है। जो किशोरों में नकारात्मक संवेगों को उत्पन्न करते हैं। इन सभी चरों का प्रभाव किशोरों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि पर पडता है। यदि इन सभी समस्याओं को समय पर पहचान कर समाधान कर लिया जाये तो इसका किशोरों की अध्ययन आदतों व शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव दृष्टिगोचर होगा।

व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों की सामान्य दक्षता बढ़ाने तथा कार्य के प्रति रचनात्मक रूचि उत्पन्न करने का दृष्टिकोण प्रदान करती है यह उनमें उधमिता की भावना का भी विकास करती है। जीवन को सुखद एवं समृद्व बनाने के लिए तथा आर्थिक स्थिति सुदृढ करने में यह प्रमुख भूमिका निभाती है। व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों को आर्थिक समृद्वि की ओर ले जाने हेतु मार्गदर्शक का कार्य करती है। व्यावसायिक शिक्षा के उपरान्त विद्यार्थी इस योग्य हो जाते हैं कि वे अपनी नैसर्गिक अभिरुचि के किसी भी व्यवसाय को कुशलता के साथ कर सकते हैं। पारम्परिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थी भी व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों से समता रखते हैं ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्यागी, जी.एस.डी. तथा पाठक, पी.डी., :(2006) "शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. ढौड़ियाल, सच्चिदानन्द व पाठक, अरविन्द : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थन हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
3. भटनागर, चांद तथा राय, पारसनाथ,: (1977) "अनुसंधान परिचय", एल.एन. अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।
4. पाठक, पी.डी, : (2007) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. शर्मा, आर. ए.,:(2009) 'शिक्षा अनुसंधान', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. श्रीवास्तव डी.एस. एवं प्रीति (2014): "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. (शब्द कोष)
8. आबिद रिजवी, : मेगा हिन्दी शब्द कोश, मारूति प्रकाशन, 33 हरि नगर, मेरठ।
9. फादर कामिल बुल्के, (1987) तृतीय संस्करण, अंग्रेजी–हिन्दी कोश, एस.चन्द एण्ड कम्पनी(प्रा.लि.) राम नगर, नई दिल्ली।
10. www.google.com.

❖◆❖